जमुना बीनी की तीन कविताएं

(1)

बचे रहने की उम्मीद

जब नदी
तुम्हें लीलने के लिए
आगे बढ़ी
तुम ऊँचे पहाड़ों में
भाग गए
घने जंगलों के
लंबे
और
चौड़े पेड़ों पर
चढ़ गए
स्वयं को बचाने
और
अपनी नस्ल को
विलुप्ति से।

तुम्हारे
आदिवासी-बोध ने बतलाया
तुम्हें पहाड़ों
और
जंगलों की ओर
भागना चाहिए
वहाँ ऊपर
दुश्मनों से
महफूज रहते आए
अनगिनत काल से

तुम भागते जाते हो
जब तक

तुम्हारी साँसें नहीं रुकती
पैर जवाब नहीं देता
फिर
तुम आश्वस्त होते हो
कि
तुम्हारे लोग
तुम्हारे बाद भी जीयेंगे
तुमसे अधिक जीयेंगे
संसार को बतलाने
तुम्हारी अद्भुत-अनोखी संस्कृति
आदिवासी संस्कृति के बारे में।

(2)

पहाड़ और आदिम निवासी

हमारे पूर्वज
तनिक भी
खतरा महसूसते
दुर्गम पहाड़ों पर
चले जाते।

पहाड़ों की
यह दुर्गमता
उनका रक्षा-कवच होता
पहाड़ों के
बीहड़ जंगल
उन्हें सुरक्षा
और
आश्वस्ति देता।

पहाड़ों की गगनचुम्बी
ऊँचाई पर
बादल रुई के फाहों सा
तैरता रहता
खुरदरे हाथों से
वह उनके
नरमाहट को सहलाते।

पहाड़ों की ओट में
डूबता-उतराता सूरज

आँख-मिचौली खेलता

यह पहाड़
शरण है
हमारे पूर्वज का
अलग कैसे करोगे
पहाड़
और
उसके आदिम निवासी को !

(3)

कब समझोगे

अनंत काल से
चली आ रही
परंपराओं
और
आदिम आस्थाओं में
छिपा दर्शन को
तुम कब समझोगे।

पर्व-त्योहार में
शस्त्रों से
सुसज्जित होना
तुम्हें बर्बर लगता।
बीहड़ जंगलों में
दुर्गम पहाड़ों में
चौड़ी बहती
नदियों में
मौन ठहरती
झीलों में
आत्माएँ निवास करती हैं
उन्हें
सताते नहीं
यह सुन
तुम्हारी आँखें
विस्मय में
फैल जाती हैं !!

ओझा के
मंत्रोचारण में
चूजे के
कलेजे-परीक्षण में
अंडे के जर्दी में
स्वप्नों के रहस्य में
जो श्रद्धा गुथित है
तुझे अर्थहीन लगता।

मृत पूर्वजों की कथा में
हास्य है
रुदन है
जन्म का उल्लास है
मृत्यु का मातम है
युद्धों का विजय घोष है
पराजय का विलाप है
पूरा एक इतिहास है
इतिहास को
परखने की
एक दृष्टि है
तुम उसे देखना
नहीं चाहते।

तुम्हारे लिए
आदिम आस्था
और
श्रद्धा का
अर्थ ढकोसला है।

तुम अपने बचाव में
आधुनिक शिक्षा का
तर्क देते हो
मात्र
तर्क के लिए तर्क
प्रश्न के लिए प्रश्न

बिना उस दर्शन को जाने
जो तुम्हारे

पूर्वजों की
विश्वदृष्टि हुआ करती थी

बिना उस पथ को चीह्ने
जिस पथ पर चलकर
तुम्हारे पूर्वजों ने
अतीत से
वर्तमान की संघर्षशील यात्रा
तय की थी।

(**लेखकीय परिचय**: जमुना बीनी चर्चित कवयित्री एवं कहानीकार हैं। वर्तमान में राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं।)